करियर शीट · CAREER SHEET

Sculptor

मूर्तिकार वह कलाकार है जो पत्थर, संगमरमर, धातु, मिट्टी, प्लास्टर या लकड़ी को तराश कर, ढाल कर या गढ़ कर त्रि-आयामी कलाकृतियाँ — मूर्तियाँ, प्रतिमाएँ, स्मारक और अमूर्त शिल्प — बनाता है। राजस्थान की मूर्तिकला परंपरा बहुत समृद्ध है;...

इस करियर की पूरी जानकारी — स्कैन करें

वेतन, परीक्षा, कॉलेज, प्रवेश के रास्ते और आगे के कदम — सब पोर्टल पर।

career.gsssjethantri.in/#/career/sculptor

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जेठन्तरी
Govt. Sr. Sec. School, Jethantri · ब्लॉक समदड़ी · बालोतरा (Block Samdari · Balotra)
www.gsssjethantri.in · career.gsssjethantri.in

सुशील कुमार शर्मा
प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि. जेठन्तरी · मास्टर ट्रेनर
Principal, GSSS Jethantri · Master Trainer

श्री चेनाराम चौधरी
प्रधानाचार्य, डाइट बाड़मेर
Principal, DIET Barmer

श्रीमती संघमित्रा
वरिष्ठ व्याख्याता, डाइट बाड़मेर (सहयोग)
Sr. Lecturer, DIET Barmer (Support)

भरत चौधरी
अभिकल्पना व विकास · व्याख्याता (इतिहास)
Designed & developed · Lecturer (History)

विशेष धन्यवाद · SPECIAL THANKS

सुरेन्द्र सिंह राठौड़
व्याख्याता (इतिहास) · रा.उ.मा.वि. कानाना

सुरेश कुमार सैन
व्याख्याता (भूगोल) · रा.उ.मा.वि. रामसीन मूंगड़ा

वनिता कुमारी
व्याख्याता (इतिहास) · रा.उ.मा.वि. रामसीन मूंगड़ा

कमलेश चौधरी
व्याख्याता (राजनीति विज्ञान) · रा.उ.मा.वि. टापरा

करियर मार्गदर्शन कार्यशाला, डाइट बाड़मेर (14–17 जुलाई 2026) में विकसित व लोकार्पित
Developed & unveiled at the Career Guidance Workshop, DIET Barmer (14–17 July 2026)

यह एक स्वतंत्र परियोजना है, जो सरकार की आधिकारिक करियर-मार्गदर्शन सामग्री पर आधारित है। · An independent project based on the Government's official career-guidance content.

1 यह करियर क्या है

मूर्तिकार वह कलाकार है जो पत्थर, संगमरमर, धातु, मिट्टी, प्लास्टर या लकड़ी को तराश कर, ढाल कर या गढ़ कर त्रि-आयामी कलाकृतियाँ — मूर्तियाँ, प्रतिमाएँ, स्मारक और अमूर्त शिल्प — बनाता है। राजस्थान की मूर्तिकला परंपरा बहुत समृद्ध है; जयपुर और मकराना का संगमरमर सदियों से मंदिर की मूर्तियों, स्मारकों और सजावटी शिल्प के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। एक मूर्तिकार पहले रेखाचित्र और मॉडल बनाता है, फिर छेनी-हथौड़ी, वेल्डिंग या ढलाई से अपनी कल्पना को ठोस रूप देता है। यह धैर्य, कल्पनाशक्ति और हाथ की कारीगरी का काम है, जो कला-प्रेम को आजीविका में बदल सकता है।

2 एक नज़र में

न्यूनतम योग्यता	12वीं पास; BFA (मूर्तिकला) के लिए कला वर्ग बेहतर
कोर्स अवधि	BFA 4 वर्ष + MFA 2 वर्ष (वैकल्पिक)
आरंभिक वेतन	₹10,000–20,000/माह (कमीशन/बिक्री पर निर्भर)
कार्य-शैली	स्वतंत्र अभ्यास, स्टूडियो, कमीशन व सार्वजनिक कला

3 क्या-क्या चाहिए

रुचियाँ

- आकृतियाँ, रूप और त्रि-आयामी वस्तुएँ गढ़ने में गहरी रुचि
- पत्थर, धातु और मिट्टी जैसी सामग्री के साथ हाथ से काम करना पसंद
- कला, मंदिर शिल्प, स्मारकों और सांस्कृतिक विरासत के प्रति लगाव

क्षमताएँ

- प्रबल कल्पनाशक्ति और स्थानिक (3D) सोच
- हाथ की सफ़ाई, धैर्य और बारीकी पर ध्यान
- शारीरिक सहनशक्ति और औज़ार चलाने की क्षमता

ज़रूरी कौशल

- पत्थर/संगमरमर की तराशी — छेनी, हथौड़ी और आधुनिक औज़ारों का उपयोग
- मिट्टी व प्लास्टर से मॉडलिंग और मूल आकृति बनाना

- धातु की ढलाई (कास्टिंग), वेल्डिंग और पेटिना का ज्ञान
- साँचा बनाना (मोल्ड मेकिंग) और साइट पर स्थापना
- कमीशन लेना, कीमत तय करना और अपनी कला का प्रचार-प्रसार
- रेखाचित्र, अनुपात और शरीर-रचना (एनाटॉमी) की समझ
- औज़ारों की सुरक्षा, धूल-रसायन से बचाव और कार्यशाला प्रबंधन

4 कैसे पहुँचें

1. 12वीं कक्षा पूरी करें; कला वर्ग और चित्रकला का अभ्यास मूर्तिकला की नींव मज़बूत करता है।
2. बैचलर ऑफ़ फ़ाइन आर्ट्स (BFA) में मूर्तिकला (Sculpture) विशेषज्ञता के लिए राजस्थान स्कूल ऑफ़ आर्ट, जयपुर या अन्य कला महाविद्यालय में प्रवेश लें।
3. प्रवेश के लिए ड्रॉइंग/एप्टीट्यूड टेस्ट व पोर्टफोलियो (अपने बनाए मॉडल, रेखाचित्र) तैयार करें।
4. पत्थर, धातु और मिट्टी की कार्यशालाओं में व्यावहारिक अनुभव लें; किसी अनुभवी मूर्तिकार के अधीन प्रशिक्षण (अप्रेंटिसशिप) लाभदायक है।
5. चाहें तो MFA (मास्टर ऑफ़ फ़ाइन आर्ट्स) से विशेषज्ञता बढ़ाएँ और शिक्षण/शोध के रास्ते खोलें।
6. प्रदर्शनियों, कला मेलों और सार्वजनिक कमीशन के ज़रिए अपना पोर्टफोलियो और पहचान बनाएँ।

प्रमुख परीक्षाएँ

- BFA प्रवेश हेतु कला महाविद्यालयों की ड्रॉइंग/एप्टीट्यूड परीक्षा एवं पोर्टफोलियो मूल्यांकन

5 कहाँ से पढ़ें

सरकारी संस्थान

- राजस्थान स्कूल ऑफ़ आर्ट (BFA/MFA मूर्तिकला) — जयपुर, राजस्थान (https://hte.rajasthan.gov.in/college/gcrsajaipur)
- फ़ैकल्टी ऑफ़ फ़ाइन आर्ट्स, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय (BVA मूर्तिकला) — वडोदरा, गुजरात (https://msubaroda.ac.in/academics/FFA/Programs/200)
- कॉलेज ऑफ़ आर्ट, दिल्ली (BFA मूर्तिकला) — नई दिल्ली (https://colart.delhi.gov.in/)

निजी संस्थान

- इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ क्राफ़्ट्स एंड डिज़ाइन (IICD) — जयपुर, राजस्थान (https://www.iicd.ac.in/)
- फ़ैकल्टी ऑफ़ फ़ाइन आर्ट्स — कला महाविद्यालय (सामान्य जानकारी) — अखिल भारतीय (https://msubaroda.ac.in/academics/FFA)

ऑनलाइन

- लोक कला व मूर्तिकला करियर मार्गदर्शन (iDreamCareer) — ऑनलाइन (https://idreamcareer.com/career/career-as-a-sculptor/)
- मूर्तिकला करियर गाइड (Study Guide India) — ऑनलाइन (https://www.studyguideindia.com/Career-Options/career-sculpture.asp)

फ़ीस

सरकारी कला महाविद्यालयों (जैसे राजस्थान स्कूल ऑफ़ आर्ट, कॉलेज ऑफ़ आर्ट दिल्ली, MSU बड़ौदा) में BFA की वार्षिक फ़ीस बहुत कम — लगभग ₹5,000–30,000 प्रति वर्ष — होती है। निजी संस्थानों (जैसे IICD) में यह ₹1–3 लाख प्रति वर्ष तक हो सकती है। इसके अलावा पत्थर, धातु और औज़ार जैसी सामग्री का अलग खर्च आता है।

छात्रवृत्तियाँ

- ललित कला अकादमी छात्रवृत्ति (Lalit Kala Akademi Scholarship) (https://lalitkala.gov.in/scholarship)
- राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल (National Scholarship Portal) (https://scholarships.gov.in)
- एसजेई राजस्थान छात्रवृत्ति (SJE Rajasthan Scholarships) (https://sje.rajasthan.gov.in/)

6 काम कैसा होता है

कहाँ काम

अपना स्टूडियो/कार्यशाला, कला दीर्घाएँ, मंदिर व स्मारक निर्माण स्थल, संगमरमर उद्योग (मकराना/किशनगढ़), सार्वजनिक कला परियोजनाएँ और कला महाविद्यालय।

कार्य-संस्कृति

काम अक्सर स्वतंत्र और परियोजना-आधारित होता है; एक बड़ी प्रतिमा या स्मारक बनाने में हफ़्तों से महीनों लग सकते हैं। शारीरिक मेहनत, धूल और औज़ारों के बीच लंबे घंटे आम हैं, पर रचनात्मक स्वतंत्रता बहुत होती है। आय कमीशन और बिक्री पर निर्भर करती है, इसलिए शुरुआत में अनियमितता रहती है।

कौन नौकरी देता है

- स्वतंत्र अभ्यास — अपना मूर्तिकला स्टूडियो और कमीशन कार्य
- कला दीर्घाएँ और नीलामी घर जो मूर्तियों का प्रदर्शन व बिक्री करते हैं
- संगमरमर व पत्थर शिल्प उद्योग (जयपुर, मकराना, किशनगढ़)
- सार्वजनिक कला परियोजनाएँ — सरकार व नगर निगमों की प्रतिमाएँ और स्मारक
- मंदिर, धार्मिक ट्रस्ट और विरासत बहाली (हेरिटेज रेस्टोरेशन) परियोजनाएँ
- कला महाविद्यालय व विश्वविद्यालय — शिक्षण और मूर्तिकला विभाग

माँग (2026)

भारत में सार्वजनिक प्रतिमाओं, स्मारकों, मंदिरों और सौंदर्यीकरण परियोजनाओं की माँग निरंतर बनी रहती है, जिससे कुशल मूर्तिकारों के लिए कमीशन के अवसर मिलते हैं। राजस्थान का समृद्ध संगमरमर व पत्थर शिल्प उद्योग (मकराना, जयपुर, किशनगढ़) एक विशेष लाभ है। साथ ही होटल, कॉर्पोरेट कार्यालय और घरों में सजावटी व समकालीन कला की माँग तथा डिजिटल/3D मूर्तिकला जैसे नए क्षेत्र भी अवसर बढ़ा रहे हैं।

7 आगे बढ़ने का रास्ता

1. छात्र / प्रशिक्षु मूर्तिकार (अप्रेंटिस)
2. सहायक मूर्तिकार / स्टूडियो सहायक
3. स्वतंत्र मूर्तिकार (अपना स्टूडियो व कमीशन)
4. स्थापित/वरिष्ठ मूर्तिकार, कला शिक्षक या स्मारक परियोजना प्रमुख

कमाई

शुरुआत	₹10,000–20,000/माह
मध्य स्तर	₹25,000–45,000/माह
वरिष्ठ स्तर	₹60,000–1,50,000+/माह

मूर्तिकार की आय मुख्यतः कमीशन और कलाकृति की बिक्री पर निर्भर करती है, इसलिए यह अनियमित हो सकती है। SalaryExpert के अनुसार भारत में एक मूर्तिकार की औसत आय लगभग ₹8.6 लाख/वर्ष (≈₹71,000/माह) है, जबकि शुरुआती स्तर पर लगभग ₹6.4 लाख/वर्ष होती है। स्थापित व प्रसिद्ध मूर्तिकार बड़े स्मारक व सार्वजनिक प्रतिमा कमीशन से इससे कहीं अधिक कमा सकते हैं।

8 अच्छी बातें · चुनौतियाँ

अच्छी बातें

- रचनात्मक स्वतंत्रता और अपनी कला को स्थायी रूप देने का संतोष
- राजस्थान की समृद्ध संगमरमर/पत्थर परंपरा से जुड़ने का विशेष अवसर
- स्वतंत्र अभ्यास, शिक्षण व सार्वजनिक कला जैसे विविध करियर मार्ग

चुनौतियाँ

- आय अनियमित और कमीशन/बिक्री पर निर्भर, विशेषकर शुरुआत में
- शारीरिक रूप से कठिन काम — धूल, वज़नी पत्थर और लंबे घंटे
- पहचान और स्थिर बाज़ार बनाने में वर्षों की मेहनत लगती है

9 असल ज़िंदगी की कहानियाँ

Ram V. Sutar
प्रसिद्ध मूर्तिकार — 'स्टैचू ऑफ़ यूनिटी' के रचयिता

महाराष्ट्र के एक साधारण बढ़ई परिवार में 1925 में जन्मे राम वनजी सुतार ने सर जे. जे. स्कूल ऑफ़ आर्ट, मुंबई से मूर्तिकला सीखी और आगे चलकर भारत के सबसे बड़े मूर्तिकार बने। उन्होंने दुनिया की सबसे ऊँची प्रतिमा — 182 मीटर की 'स्टैचू ऑफ़ यूनिटी' (सरदार पटेल) — के साथ-साथ संसद भवन की महात्मा गांधी प्रतिमा और चंबल स्मारक जैसी अनेक कृतियाँ रचीं। उन्हें पद्म श्री और पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। दिसंबर 2025 में 100 वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ। उनका जीवन दिखाता है कि छेनी-हथौड़ी की मेहनत से एक कलाकार राष्ट्रीय गौरव तक पहुँच सकता है।

Wikipedia · https://en.wikipedia.org/wiki/Ram_V._Sutar

Latika Katt
अग्रणी महिला मूर्तिकार (कांस्य, पत्थर व धातु)

1948 में जन्मी लतिका कट्ट भारत की सबसे प्रतिष्ठित महिला मूर्तिकारों में से एक थीं। उन्होंने बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में स्नातक किया और लंदन के स्लेड स्कूल ऑफ़ आर्ट में अध्ययन किया। पत्थर तराशी, कांस्य ढलाई और धातु में उनकी प्रकृतिवादी, रोदाँ-प्रेरित शैली को ललित कला अकादमी पुरस्कार सहित कई सम्मान मिले। उन्होंने जामिया मिलिया इस्लामिया और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में मूर्तिकला पढ़ाई और विभागाध्यक्ष रहीं। जनवरी 2025 में जयपुर में उनका निधन हुआ। उनकी राह उन लड़कियों के लिए प्रेरणा है जो मूर्तिकला जैसे क्षेत्र में अपनी पहचान बनाना चाहती हैं।

Wikipedia · https://en.wikipedia.org/wiki/Latika_Katt

10 अगर यह रास्ता न बने तो

एक परीक्षा या एक प्रयास से रास्ता बंद नहीं होता। इन्हीं विषयों से ये रास्ते भी खुलते हैं — इनमें प्रवेश आमतौर पर आसान होता है और आगे चलकर इसी क्षेत्र में लौटा जा सकता है।

- विज़ुअल आर्टिस्ट (चित्रकार)
- कैलीग्राफर

11 स्रोत व आगे पढ़ें

1. राजस्थान करियर गाइडेंस – मूर्तिकार (Sculptor) — https://cg.rajasthan.gov.in/careerguidance/hi/career/%e0%a4%ae%e0%a5%82%e0%a4%b0%e0%a5%8d%e0%a4%a4%e0%a4%bf%e0%a4%95%e0%a4%be%e0%a4%b0-sculptor/

2. राजस्थान स्कूल ऑफ़ आर्ट, जयपुर (उच्च तकनीकी शिक्षा विभाग) — https://hte.rajasthan.gov.in/college/gcrsajaipur

3. ललित कला अकादमी – छात्रवृत्ति — https://lalitkala.gov.in/scholarship

4. SalaryExpert – भारत में मूर्तिकार वेतन — https://www.salaryexpert.com/salary/job/sculptor/india

5. MSU बड़ौदा – विज़ुअल आर्ट्स (मूर्तिकला) — https://msubaroda.ac.in/academics/FFA/Programs/200

और 770+ करियर — पूरा पोर्टल

रुचि व योग्यता परीक्षण, सरकारी नौकरियाँ, कौशल पाठ्यक्रम, बायोडाटा बनाने की सुविधा — सब मुफ़्त, बिना लॉगिन, इंटरनेट के बिना भी।

career.gsssjethantri.in